ISSN 0975-8321
RNI No. UPHIN/2008/29149

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत

वाङ्मय

(त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका)

अप्रैल - जून 2018

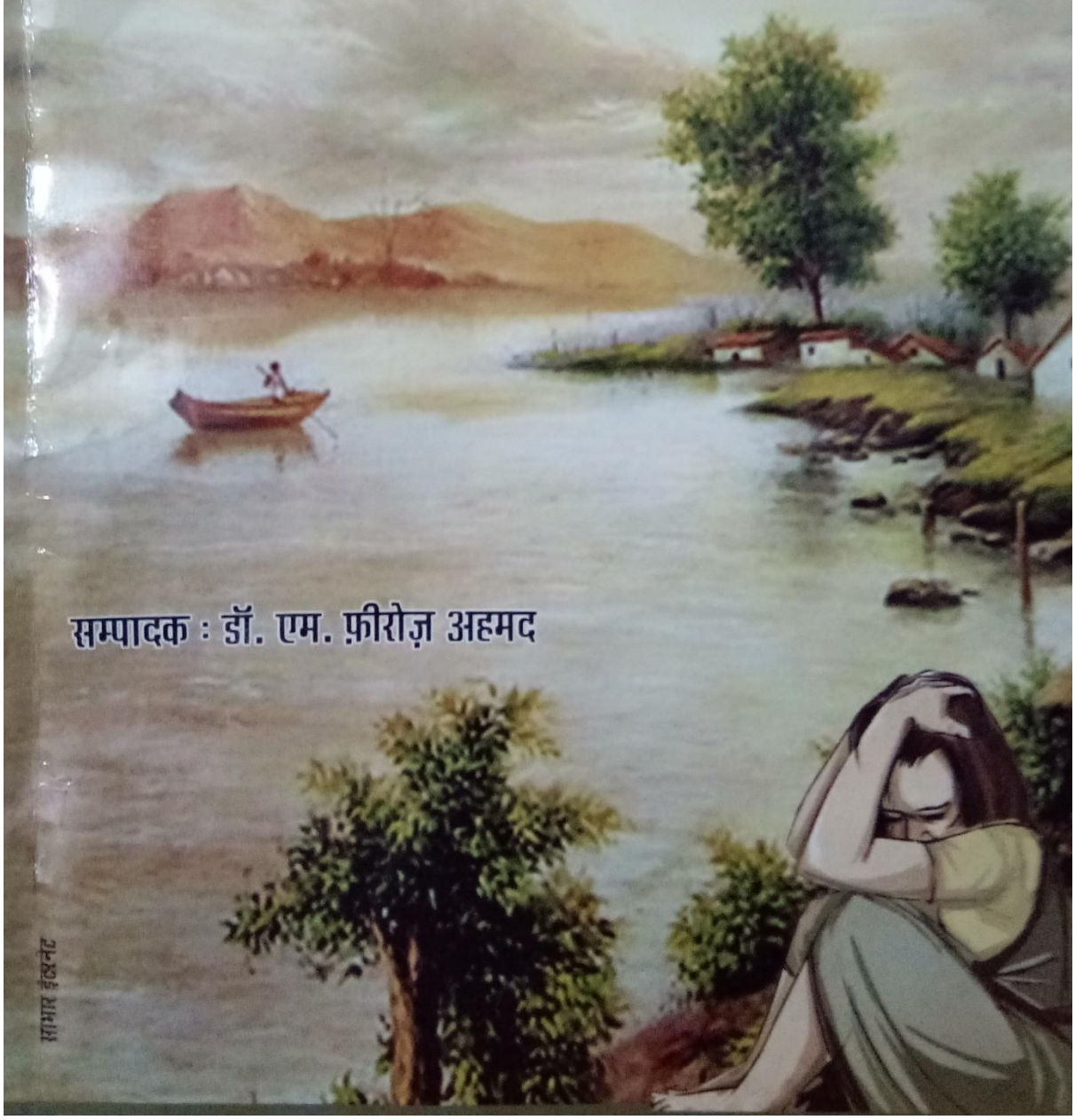

सम्पादक : डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद

साभार इंटरनेट

ISSN 0975-8321

वाङ्मय त्रैमासिक

वर्ष : 16 अप्रैल–जून 2018

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली से सहयोग प्राप्त

सलाहकार सम्पादक
प्रो. मेराज अहमद
(ए.एम.यू. अलीगढ़)

सम्पादक
डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद
मोबाइल : 9044918670

इस अंक का मूल्य- 80 रुपए

परामर्श मण्डल
प्रो. रामकली सराफ(बी.एच.यू.)
मूलचन्द सोनकर (वाराणसी)
डॉ. शगुफ़्ता नियाज़ (अलीगढ़)
डॉ. इकरार अहमद (दिबियापुर)

सम्पादकीय सम्पर्क
205- फेज-1, ओहद रेजीडेंसी, नियर पान वाली कोठी, दोदपुर रोड,
सिविल लाइन, अलीगढ़-202002
मोबाइल : 9044918670
E-mail : vangmaya@gmail.com

सहयोग राशि :
एक प्रति : 60 रु., व्यक्तिगत शुल्क पाँच वर्ष के लिए 1000 रु., द्विवार्षिक शुल्क संस्थाओं के लिए : 700 रु., संस्थाओं के लिए आजीवन : 3,000/(दस वर्ष के लिए)

सह-सम्पादक

अकरम हुसैन, अलीगढ़ (मोबाइल : 08791633435)
डॉ. मो. आसिफ खान

कानूनी सलाहकार

एम. एच. खान, एडवोकेट(हाईकोर्ट, इलाहाबाद)
एम. ए. खान, एडवोकेट(हाईकोर्ट, इलाहाबाद)

सम्पादन/संचालन

अनियतकालीन, अवैतनिक और अव्यावसायिक।
रचनाकार की रचनाएँ उसके अपने विचार हैं।
रचनाओं पर कोई आर्थिक मानदेय नहीं दिया जाएगा।
लेखकों, सदस्यों एवं मित्रों के आर्थिक सहयोग से पत्रिका प्रकाशित होती है।
उनसे सम्पादक-प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।
किसी भी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र अलीगढ़ होगा।

रचनाकारों से.....

- रचनाएँ कृतिदेव 10 में टाइप कराकर ही भेजें।
- रचनाओं के साथ पोस्टकार्ड होने पर ही प्राप्ति की सूचना भेजी जाएगी।
- डाक टिकट लगा लिफाफा साथ आने पर ही अस्वीकृति रचना लौटायी जा सकती है अन्यथा नष्ट कर दी जाएगी।
- कृतियों की समीक्षा के लिए पुस्तक की दो प्रतियाँ भेजना अनिवार्य है।
- नमूना प्रति अवलोकन के लिए 50.00 रुपये के डाक टिकट या एम. ओ. भेजना अनिवार्य है।
- हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं की रचनाओं का वाङ्मय स्वागत करता है।

शुल्क भेजने का पता

मनीआर्डर या बैंक ड्राफ़्ट : *'डॉ. फ़ीरोज़ अहमद' या 'वाङ्मय'* के नाम

205- ओहद रेजीडेंसी, नियर पान वाली कोठी, दोदपुर रोड, सिविल लाइन, अलीगढ़-202002

डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद की ओर से डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद द्वारा प्रकाशित, डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद द्वारा मुद्रित तथा नवमान आफसेट प्रिंटर्स अलीगढ़ में मुद्रित एवं ई-3, अब्दुल्लाह क्वार्टर्स, लाल बहादुर शास्त्री मार्ग अलीगढ़ से प्रकाशित।
सम्पादक- डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद

डॉ. गजेन्द्र कुमार जैन
राहुल सांस्कृत्यायन की कहानियों में वैचारिक आयाम/73

डॉ. कैलाश नारायण मीणा
समकालीन काव्य में मानवीयता बोध : स्वरूप और विश्लेषण/78

डॉ. कुमारी उर्वशी
वर्तमान दौर में हिन्दी का बाल साहित्य : उपेक्षा और अपेक्षा का दौर/82

साधना यादव
दिवाकर वर्मा की बाल कृति सुन्दरवन का मूल्यांकन/87

डॉ. शशि रंजना अग्निहोत्री
शकुन्तला माथुर के काव्य की शिल्पगत उपलब्धियाँ/90

कुमारी सुजाता
भाषा–व्यवस्था और भाषा–व्यवहार का अन्तर संबंध/92

डॉ. अलका दीक्षित
दलित आन्दोलन की पृष्ठभूमि : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में/96

डॉ. शुभा बाजपेयी
गिरिजा कुमार माथुर के काव्य में भावाभिव्यक्ति/100

डॉ. विमल ग्यानोबाराव सूर्यवंशी
कला का जीवन में महत्त्व/103

डॉ. संतोष राजपाल नागुर
जल संस्कृति और भारतीय दर्शन/105

अनीता
प्रिय प्रवास में चित्रित नारी चेतना/107

डॉ. योगेश विट्ठल दाणे
समकालीन अदम्य आस्था के कवि – केदारनाथ सिंह/110

सुरेश कुमार निराला
सिनेमा : भाषा, समाज और संस्कृति/114

डॉ. शिवा गुप्ता
हफीजुल्लाह खाँ के हजारा में शृंगार आदि रस/117

डॉ. गीता कुमारी
उपन्यास में वृद्धावस्था की प्रगतिशील चेतना/120

डॉ. आरती दुबे
हृदयेश के कथा साहित्य में सामाजिक परिदृश्य/122

के. जानकी
गंगा प्रसाद विमल की कहानियों में समकालीनता/125

डॉ. गजेन्द्र सिंह
कमलेश्वर के उपन्यासों में राजनैतिक विसंगतियों का यथार्थ/129

डी. कार्तिकेयन
कवि नरेश मेहता का व्यक्तित्व : एक मूल्यांकन/134

कमलेश्वर के उपन्यासों में राजनीतिक विसंगतियों का यथार्थ

डॉ. गजेन्द्र सिंह

राजनीति आधुनिक समाज का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। समाज के विकास एवं पतन में राजनीति का विशेष योगदान होता है। आज की राजनीति की सबसे बड़ी विडम्बना उसका भ्रष्ट हो जाना हैं। वर्तमान राजनेताओं ने स्वतंत्रता प्राप्ति के समय देखे गये सपनों को तोड़ दिया है। वे केवल वोट की राजनीति करने में लगे हैं। सत्ता हथियाना उनका पेशा बन गया है, इसके लिए उन्हें चाहे कितना भी भ्रष्टाचार करना पड़े? राजनीति में पग-पग पर भ्रष्टाचार, स्वार्थ, भाई-भतीजावाद, जातिवाद एवं सम्प्रदायिकता व्याप्त है। जिस कारण इसका रूप, विकृत हो गया है। राजनीति के इसी विकृत रूप एवं परिवेश को साहित्यकारों ने साहित्यरूपी दर्पण के माध्यम से समाज के समक्ष परत-दर-परत खोला है, साथ ही अनेक प्रश्न समाज के बीच खड़े कर दिये हैं। कमलेश्वर ने भी अपने युग-परिवेश की राजनीति को अपने उपन्यासों में स्थान देकर समाज के लिए एक आइना तैयार किया है, जिसे देखकर हमारा समाज अपनी राजनीति की खामियों को सुधार सकता है।

राजनीति में व्याप्त स्वार्थ

कमलेश्वर ने 'एक सड़क सत्तावन गलियाँ' उपन्यास के माध्यम से स्वतन्त्रता के बाद राजनीति में उत्पन्न हुए स्वार्थ को परत-दर-परत खोला है। इस उपन्यास में "कमलेश्वर ने मैनपुरी कस्बे में व्याप्त कम्युनिस्ट-कांग्रेस विवाद, साम्प्रदायिक तनाव, झूठी और खोखली नेतागिरी, अखबार नवीसी की दयनीयता, नाटक मंडली तथा लॉरी ड्राइवरों के जीवन की अस्थिरता एवं प्रेम में टूटते-बिखरते चरित्रों का यथार्थ रूप में निरूपण किया है।"[1] इस उपन्यास का पात्र बनवारी धानुक एक स्वार्थी राजनेता है। वह सरनाम सिंह जैसे दबंग डकैत का सहारा लेकर चुनाव जीतता है और अपना स्वार्थ सिद्ध हो जाने के बाद सरनाम सिंह से मुकर जाता है। जिसके कारण क्रोध में सरनाम सिंह कहता है- "सब हो जायेगा, इस बार चुनाव पर अपने लैसन्स लिए जाएं, जो लैसन्स दिलवायेगा सो वोट पाएगा।"[2] इस प्रकार कमलेश्वर ने बनवारी धानुक जैसे स्वार्थी नेताओं के माध्यम से वर्तमान राजनीति के उन स्वार्थी नेताओं की पोल खोली है जो राजनीति को स्वार्थ की राजनीति बना रहे हैं।

'लौटे हुए मुसाफिर' उपन्यास में कमलेश्वर ने साम्प्रदायिकता के कारण उत्पन्न हुए राजनीतिक स्वार्थ की पोल खोली है। यह उपन्यास भारत-पाकिस्तान विभाजन से पूर्व उत्पन्न हुए हिन्दू-मुस्लिम तनाव को उजागर करता है। इसमें हिन्दू व मुस्लिम नेताओं के स्वार्थ की पोल खोली गई है। इसमें लेखक ने यह भी दिखाने का प्रयास किया है कि भारत-पाकिस्तान का बँटवारा भी हिन्दू-मुस्लिम नेताओं के स्वार्थ के चलते हुआ। वे केवल सत्ता हथियाना चाहते थे। उन्होंने इसकी भी परवाह नहीं की कि हमारे इस सत्ता हथियाने के स्वार्थ के चलते जनता का क्या होगा? उन्होंने अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए देश विभाजन का मुद्दा जनता के बीच उछालकर साम्प्रदायिक दंगे करा दिये। अगर वे नेता चाहते तो इसे रोक सकते थे, लेकिन स्वार्थ के कारण उन्होंने इसे रोकने के बजाय और बढ़ाया। फलस्वरूप भारत का विभाजन हो गया। इसमें जनता को ही कष्ट झेलने पड़े और नेताओं को सत्ता की अरामदायक कुर्सियाँ मिली। नेताओं के इस स्वार्थ को इंगित करता यह उदाहरण देखने योग्य है यथा- "हिन्दू नेता यह चाहते हैं कि वे मुसलमानों को साथ लेकर अभी तो अंग्रेजों से हुकूमत छीन लें, बस....। बाद में वे मुसलमानों को अँगूठा दिखा देंगे, यही उनकी चाल है।"[3] इसी प्रकार मुस्लिम नेता जिन्ना के स्वार्थ की पोल खोलता उपन्यास के पात्र सत्तार का यह कथन दृष्टव्य है- "सुना है जिन्ना साहब मजहब को नहीं मानते- वे वह सब करते हैं जो इस्लामी शरीयत के खिलाफ है। वे न उर्दू जानते हैं, न अरबी। उन्होंने पारसी लड़की से शादी की है.....वो हमारे लीडर कैसे हो सकते हैं?"[4] इस प्रकार जिन्ना जैसे नेता के स्वार्थ की पोल खोली गई है।

कमलेश्वर ने 'काली आँधी' उपन्यास में भी राजनीति में आ गये स्वार्थ की पोल खोली है। इस उपन्यास की नायिका

मालती एक स्वार्थी राजनेता के रूप में उभरती है। "मालती अपने स्वार्थ के लिए दूसरों को इस्तेमाल करती है, धर्म और जातीय भावना का इस्तेमाल करती है, इतना ही नहीं परित्यक्त पति का भी इस्तेमाल करती है।" मालती जब भोपाल क्षेत्र से चुनाव लड़ती है तो अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए, लाला दीनानाथ को अपने सामने चुनाव लड़ाने की चाल चलती है। वह अपने कार्यकर्ताओं को अपनी चाल को समझाते हुए कहती है- "चुनाव मैदान में इत्तफाक से बनियों का कोई अपना कंडीडेट नहीं है। लाला दीनानाथ के खड़े होते ही सारे बनियों उनके इर्द-गिर्द जमा हो जायेंगे.....यह शर्तिया होगा, क्योंकि लोगों के मन में अपनी जाति के लिए लगाव होना लाजमी है। लाला दीनानाथ के खड़े होते ही सब बनिये एकजुट हो जायेंगे और उनका समर्थन करेंगे.....जब सारे बनिये लाला दीननाथ के झण्डे के नीचे जमा हो जायेंगे, उस वक्त लाला दीनानाथ चुनाव से मेरे फेवर में विड्रा करेंगे।" इस प्रकार मालती अपने स्वार्थ को सिद्ध करने के लिए लोगों को जाति के आधार पर बेवकूफ बनाती है। राजनीति के इसी स्वार्थ पर व्यंग्य करता हुआ मालती का पति जग्गी एक दूसरे पात्र गुरुसरन से कहता है- "यार तुम्हारी यह राजनीति बड़ी घटिया चीज है। तुम लोग सिर्फ चीजों का बखूबी इस्तेमाल करना जानते हो।.....बाढ़ आई तो उसे इस्तेमाल करो, सूखा पड़े तो उसे इस्तेमाल करो.....कहीं कोई मर गया तो उसकी मौत को इस्तेमाल करो.....इससे ज्यादा घटिया बात और क्या हो सकती है कि दुखी और मुसीबतजदा इन्सानों के सपनों तक का इस्तेमाल तुमने कर लिया......।" इस प्रकार राजनीति के स्वार्थ को कमलेश्वर ने 'काली आँधी' की पात्र मालती के माध्यम से बेनकाब किया है, जो कि महत्त्वपूर्ण कार्य है।

कमलेश्वर ने 'रेगिस्तान' उपन्यास में भी राजनेताओं के स्वार्थ की पोल खोली है। कमलेश्वर ने इसमें यह दिखाया है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद के राजनेता बेहद स्वार्थी हो चुके हैं। ये नेता आम आदमी की मदद बिना किसी स्वार्थ के नहीं करते हैं। जब वोट या अन्य कोई स्वार्थ दिखता है तभी ये किसी आम नागरिक की मदद करते हैं। 'रेगिस्तान' का नायक विश्वनाथ जोकि गाँधी के आदर्शों को इमानदारी से अपने जीवन में उतारकर, अपने जीवन को समाज कल्याण के लिए समर्पित कर देता है। उसे भी अन्त में स्वार्थी राजनेता (एम.एल.ए.) के स्वार्थ के कारण विभिन्न परेशानियाँ झेलनी पड़ती हैं। जब विश्वनाथ हिन्दी मंदिर बनवाने के लिए जमीन माँगने एम.एल.ए. के पास जाता है तो वहाँ उसे बेइज्जती के सिवा कुछ नहीं मिलता। एम.एल.ए. के स्वार्थ एवं अकर्मण्यता को इंगित करता यह उदाहरण देखने योग्य है यथा- "मेरी जेब में जमीन रखी है, निकाल लो विश्वनाथ जी! एमेले ने टके-सा जवाब दे दिया था। उनके आस-पास बैठे मुसाहिब हो-हो करके हँस पड़े थे। विश्वनाथ देखता रह गया था। उसका मुँह उतर आया था। जबान सूखने लगी थी। इतने बड़े गाँधी जी भी ऐसे बात नहीं करते थे। वह उन्हें देखता रह गया था। शायद एमेले उसे और ज्यादा बेइज्जत करने पर उतारू थे। कहने लगे- देखा चौधरी साहब! ऐसे लोग चले आते हैं! इन्हें देखिए, जमीन माँगने आए हैं! मुँह उठाए सीधे यहीं चले आते हैं....।" इस प्रकार गाँधी के आदर्शों का पतन दिखाकर लेखक ने आज की राजनीति के स्वार्थ पर करारा व्यंग्य किया है।

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में कमलेश्वर ने राजनीतिक स्वार्थ की धज्जियाँ उधेड़कर रख दी हैं। कमलेश्वर ने इसमें देश के ही नहीं अपितु विश्व के बड़े-बड़े नेताओं के स्वार्थ को बेनकाब किया है। अदीबे आलिया इस उपन्यास का नायक है, जो अपनी अदालत के कठघरे में विश्व की सभी समस्याओं को व उनसे जुड़े लोगों को खड़ा करता है और उन्हें समाधान का हुक्म देता है। अदीब संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव की स्वार्थपूर्ण नीतियों पर अंगुली उठाते हुए व उन्हें ठीक करने का आदेश देते हुए कहता है- "कोफी अन्नान से कहो कि दुनिया की छाती में जो तेज दर्द बार-बार उठता है.....और उसे साँस लेने में जो तकलीफ लगातार हो रही है, उसके इलाज के लिए उन्हें इस दुनिया का कामकाज सौंपा गया था, लगता तो यहाँ तक है कि एक ध्रुवीय शक्ति के पक्ष में उन्होंने अपने वह नैतिक हथियार भी डाल दिए हैं, जो बड़ी उम्मीद से उन्हें सौंपे गये थे...इसी का नतीजा है विभाजन और दुर्दान्त दमन का यह दौर....अगर कोफी अन्नान भूल गये हैं तो उन्हें याद दिलाओ कि आर्थिक संस्कृतियों के संघर्ष के नाम पर जो युद्ध चले और चल रहे हैं वे हर देश और संस्कृति के आम आदमी के विनाश का कारण बन रहे हैं...वे अंधेरे इतिहास और धर्मांध विश्वास को जन्म देकर जन और जाति संहार के वाहक बन गए हैं।....कोफी अन्नान से जाकर पूछो, क्या इसी भविष्य के लिए उन्हें राष्ट्रों का संयुक्त लोकतंत्र सौंपा गया था?"

इसी प्रकार कमलेश्वर ने अदीब की अदालत में नाटो संगठन के स्वार्थों की पोल खोली है। अदीब जब एक दस्तक से संवाद करता है, तो वह दस्तक नाटो के स्वार्थों की पोल खोलते हुए अदीब से कहती है- "जी हाँ अदीबे आलिया! हमारे भूखंड पर नाटो नाम के एक दशानन ने जन्म लिया है ....सागर पार का एक और राक्षस उनका सरगना है। उन्होंने मिलकर सर्बिया और युगोस्लाविया पर हमला करके मुझे श्मशान बना दिया है....सर्बिया प्रभुसत्ता सम्पन्न मेरे ही युगोस्लाविया का हिस्सा है और कोसोवो उसी आजाद भूखंड सर्बिया का इलाका है....लेकिन नाटो के राक्षसों और उसके सरगना ने अपने हितों के लिए हमें बरबाद कर दिया है। वे राक्षस अग्निताण्डव कर रहे हैं, वे मेरे स्वायत्तता सम्पन्न देश को विभाजित करके, कोसोवो को अपने नियंत्रण में रखना चाहते हैं।" इस प्रकार कमलेश्वर ने वर्तमान राजनीति में व्याप्त स्वार्थ को बड़े ही गूढ़ ढंग से उजागर किया है।

कमलेश्वर ने 'एक और चन्द्रकान्ता' उपन्यास में भी राजनीतिक स्वार्थ को परत-दर-परत खोला है। इस उपन्यास में व्याप्त राजनीतिक स्वार्थ दो राज्यों में युद्ध कराने का एक कारण है। इस उपन्यास का पात्र क्रूर सिंह निहायत स्वार्थी सेनापति है। वह स्वयं विजयगढ़ का राजा बनाने के स्वार्थ के चलते, महाराजा जय सिंह के इकलौते पुत्र राजकुमार शक्ति सिंह की हत्या अपने भाई जालिम सिंह के हाथों करवा देता है और हत्या का आरोप नौगढ़ के राजकुमार वीरेन्द्र सिंह पर लगा देता है। फलस्वरूप दोनों राज्यों में तकरार हो जाती है। साथ ही क्रूर सिंह विजयगढ़ की राजकुमारी चन्द्रकान्ता से विवाह कर राजा बनने के स्वार्थ का सपना देखने लगता है। क्रूर सिंह को इंगित करता यह उदाहरण देखने योग्य है यथा- "राजकुमार वीरेन्द्र सिंह दहाड़ उठे, जिन महाराजा जय सिंह का नमक खाकर क्रूर सिंह और तू पला-बढ़ा.....जिन्होंने तुम दोनों भाइयों को ही नहीं तुम्हारे पूरे परिवार की परवरिश की, तुमने उन्हीं के इकलौते बेटे को मार डाला- 'सल्तनत को हासिल करने का यही दस्तूर है.....और सुन वीरेन्द्र सिंह! उस दिन तो तेरी आत्मा भी जलकर राख हो जाएगी जिस दिन तू महाराजा के रूप में मेरे भाई क्रूर सिंह को विजयगढ़ के राजसिंहासन पर बैठा देखेगा। मेरे भाई क्रूर सिंह के सिर पर विजयगढ़ के महाराजा का राजमुकुट होगा और उसके साथ सिंहासन पर उसके आगोश में बैठी होगी तेरी महबूबा विजयगढ़ की राजकुमारी चन्द्रकान्ता!""

इस प्रकार कमलेश्वर के साहित्य में राजनीतिक स्वार्थ को परत-दर-परत खोला गया है। इस स्वार्थ के कारण आम जनता का शोषण हो रहा है। राजनेता अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए नये-नये हथकंडे अपना रहे हैं। वे देश को दिन-प्रतिदिन खोखला बना रहे हैं। अपने कर्तव्यों को भूलकर केवल अधिकारों का निरंकुशता के साथ प्रयोग कर रहे हैं।

राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारतीय राजनीति में भ्रष्टाचार बहुत तेजी से बढ़ा है। राजनेता भ्रष्ट तरीकों को अपनाकर अपने स्वार्थों की सिद्धि कर रहे हैं। इसके कारण समाज व राष्ट्र का अस्तित्व भी खतरे में पड़ गया है। राजनेताओं के पास अरबों रुपयों की सम्पत्ति इकट्ठी हो गयी है जबकि आम जनता व देश पर कर्ज बढ़ गया है। कमलेश्वर ने अपने साहित्य में राजनीति के इसी भ्रष्टाचार की पोल खोलकर समाज को चेताने का कार्य किया है।

कमलेश्वर का उपन्यास 'एक सड़क सत्तावन गलियाँ' राजनीति के इसी भ्रष्टाचार की पोल खोलता है। "इस उपन्यास में अनेक स्थलों पर उपन्यासकार ने वर्तमान राजनीतिक परिवेश में अनुचित मूल्यों की स्वीकृति के कारण, राजनीतिक जीवन कितना भ्रष्ट हो रहा है, इसका मार्मिक चित्रण किया है।" इस उपन्यास का प्रमुख पात्र सरनाम सिंह भ्रष्ट एवं ढोंगी नेता लालचन्द व उसके साथी नेताओं के भ्रष्टाचार की पोल खोलता हुआ लालचन्द से कहता है- "उन नेताओं से लड़िए जो रिश्वत ले-लेकर जमीनें बाँटते हैं। उन अफसरों के बंगलों पर धरना दीजिए जो नशाबन्दी कानून के नोटिस पर दस्तखत करके अंग्रेजी शराब की चुस्कियाँ लेते हैं।" इसी प्रकार बनवारी धानुक भी एक भ्रष्ट नेता है। वह डाकू सरनाम सिंह की सहायता लेकर एमेले (एम.एल.ए.) का चुनाव जीतता है और किराये पर डाकुओं को बन्दूकें देता है। बनवारी धानुक एमेले के भ्रष्टाचार को उजागर करता यह उदाहरण देखने योग्य है यथा- "कानाफूसी के अंदाज में मंगल ने सरनाम से कहा, किसी तरह बनवारी धानुक को फँसवा दो, जब से एमेले हुआ है, दिमाग नहीं मिलता, तीन सौ पर दी है इस बार.....किराए के कितने हथियार हैं? तीन, दो पुराने वालों के, एक दुनाली बनवारी धानुक की....."

'लौटे हुए मुसाफिर' उपन्यास में भी राजनेताओं के भ्रष्टाचार की पोल खोली गई है। इसमें लेखक ने यह दिखाया है कि राजनेता केवल अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं इसके लिए चाहे उन्हें कोई भी मार्ग अपनाना पड़े। इस उपन्यास का पात्र साईं हिन्दू नेताओं के भ्रष्ट तरीकों की पोल खोलते हुए कहता है- "हिन्दू नेता यह चाहते हैं कि वे मुसलमानों को साथ लेकर अभी तो अंग्रेजों से हुकूमत छीन लें, बस...। बाद में वे मुसलमानों को अंगूठा दिखा देंगे, यही उनकी चाल है।" इसी प्रकार बंगाल के मुख्यमंत्री के भ्रष्ट आचरण की पोल खोलता यह उदाहरण देखने योग्य है यथा- "बंगाल का मुख्यमंत्री मुसलमान है न....वह साला सुहरावर्दी। उसी ने सब कराया है। महीनों पहले से कत्लेआम की तैयारियां हुई थीं।" इस प्रकार राजनेता भ्रष्ट आचरण का सहारा लेकर

भ्रष्ट तरीकों के माध्यम से जनता का शोषण करते हैं, यहाँ तक कि उसे मरवाने की भी साजिश रचते हैं।

'काली आँधी' उपन्यास में कमलेश्वर ने वर्तमान राजनीति के भ्रष्टाचार का यथार्थ चित्रण किया है। इस उपन्यास की "नायिका मालती लोकसभा के चुनाव में वे सारे दाँव-पेंच, नाटक, पैंतरे और तिकड़म-बाजियाँ खेलती है, जो स्वातंत्र्योत्तर भारत के चुनावों में सफलता प्राप्त करने के लिए खेले जाते हैं।"[17] इस कारण भारतीय राजनीति में दिन-प्रतिदिन भ्रष्टाचार बढ़ा है। मालती एक ऐसी राजनेता है जो वर्तमान नेताओं की तरह दादा (गुंडे) लोगों को अपने साथ रखकर, आम जनता को डरा धमकाकर वोट बटोरती है। उनके इस भ्रष्ट तरीके की पोल खोलता यह उदाहरण देखने योग्य है यथा- "कुछ दादा किस्म के लोगों को भी रोजनदारी पर रखना था। मालती जी की जीप के लिए ऐसा ड्राइवर चाहिए था जो जरूरत पड़ने पर दादागिरी भी कर सके। मालती जी का अपना ड्राइवर सुलतान अब इस लायक नहीं रह गया था।"[18] मालती आम जनता को बेवकूफ बनाती हुई अपने चुनाव के लिए भ्रष्ट तरीके से राशन जमा करवाती हैं। इसकी पोल खोलते हुए चन्द्रसेन कहता है- "जब हमारे इस शहर के मामूली आदमी को राशन की लाइन में घंटों लगे रहने के बाद भी पेट-भर राशन नहीं मिल पाता, तब उनके चुनाव कार्यालय में सैकड़ों बोरी अनाज कहाँ से आया है? यह काले बाजार से नहीं आया है तो कहाँ से आया है? तो भाइयों, भूखी और नंगी जनता अब बर्दाश्त नहीं करेगी ....मालती जी के लोग यहाँ चुनाव लड़ने नहीं, मौज-मस्ती काटने और दावतें उड़ाने आए हैं...."[19] मालती जब भ्रष्टाचार का सहारा लेकर राजनीति में पैठ बनाती जाती है तो उसका पति जग्गी उसके भ्रष्टाचार से परेशान हो उठता है। फलस्वरूप दोनों के बीच में तनाव उत्पन्न हो जाता है। जग्गी मालती से खिन्न होकर राजनीतिक भ्रष्टाचार की पोल खोलता हुआ कहता है- "यार तुम्हारी यह राजनीति बड़ी घटिया चीज है। तुम लोग सिर्फ चीजों का बखूबी इस्तेमाल करना जानते हो।. ...बाढ़ आई तो उसे इस्तेमाल करो, सुखा पड़े तो उसे इस्तेमाल करो....कहीं कोई मर गया तो उसकी मौत को इस्तेमाल करो...इससे ज्यादा घटिया बात और क्या हो सकती है कि दुखी और मुसीबतजदा इन्सानों के सपनों तक का इस्तेमाल तुमने कर लिया.... !"[20] इस प्रकार आज की राजनीति इतनी भ्रष्ट हो चुकी है कि उसमें मानवता के लिए कोई जगह नहीं बची है। मानव का तन, मन, धन के स्तर पर शोषण किया जाता है। जोकि एक त्रासदी है। 'रेगिस्तान' उपन्यास में कमलेश्वर ने स्वतन्त्रता के बाद हुए बदलाव को यथार्थ रूप में उजागर किया है। साथ ही राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार की भी पोल खोली है। इस उपन्यास का नायक विश्वनाथ राष्ट्रप्रेमी, कर्तव्यनिष्ठ, ईमानदार एवं त्यागशील युवक है। वह अपना जीवन गाँधी के विचारों को प्रसारित करने तथा राष्ट्र व राष्ट्रभाषा हिन्दी की सेवा करने में लगा देता है। लेकिन अन्त में वह देश के राजनेता के भ्रष्ट आचरण के कारण दुखी होता है। जब विश्वनाथ हिन्दी मंदिर बनवाने के लिए एक एमेले (एम.एल.ए.) के पास जाता है, तो वह एमेले विश्वनाथ को जमीन ना देकर उसका उपहास करता है। वह एमेले विश्वनाथ से कहता है- "मेरी जेब में जमीन रखी है, निकाल लो विश्वनाथ जी! एमेले ने टके-सा जवाब दे दिया था। उनके आस-पास बैठे मुसाहिब हो-हो करके हँस पड़े थे। विश्वनाथ देखता रह गया था। उसका मुंह उतर आया था। जबान सूखने लगी थी। इतने बड़े गांधी जी भी ऐसे बात नहीं करते थे। वह उन्हें देखता रह गया था। शायद एमेले उसे और ज्यादा बेइज्जत करने पर उतारू थे। कहने लगे- देखा चौधरी साहब! ऐसे लोग चले आते हैं! इन्हें देखिए, जमीन मांगने आए, हैं! मुंह उठाए सीधे यहीं चले आते हैं.... !"[21] इस प्रकार आज के राजनेताओं के भ्रष्ट आचरण को कमलेश्वर ने एमेले के माध्यम से उजागर किया है। आज के नेता भी ठीक इसी एमेले की तरह हैं जो एक आम-आदमी की मदद करने के बजाय उसका मजाक बनाते हैं।

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास के माध्यम से कमलेश्वर ने राजनीतिक भ्रष्टाचार की पोल खोली है। इसमें कमलेश्वर ने दिखाया है कि वर्तमान राजनेता अपने मूल कार्य को छोड़कर दूसरे कार्यों में लगे हैं। उनका यही भ्रष्ट आचरण देश की जनता की मौत का कारण बना हुआ है। दिन-प्रतिदिन हजारों लोगों को आतंकवादी मृत्यु के घाट उतार रहे हैं और इसका कारण है राजनेताओं की कर्तव्यविमुखता, उनका आचरण, उनकी निष्क्रियता, उनका स्वार्थ। इस उपन्यास के पात्र अदीब के माध्यम से कमलेश्वर ने राजनेताओं की पोल खुलवाई है। अदीब कहता है- "कांग्रेस देशी-विदेशी (सोनिया गांधी को लेकर) के मसले में फँसी हुई है। भाजपा और उसकी मित्र पार्टियाँ अपने निजी कार्यक्रमों में व्यस्त हैं। कामचलाऊ प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जगजीत- गुलजार के कैसेट 'मरासिम' का लोकार्पण कर रहे हैं। अखबार वर्ल्ड-कप की खबरों से भरे हैं.....जो सूचनाएँ देश को तत्काल मिलनी चाहिए, उसके सूत्रों को संभालने वाले सूचना-प्रसारण मंत्री प्रमोद महाजन प्रसार भारती को समाप्त करने की मुहिम में मशगूल हैं। विदेशमंत्री जसवन्त सिंह कारगिल सीमा पर चल रही विदेशी गोलाबारी से बेखबर, मध्य एशिया के देशों से मैत्री सम्बन्ध बनाने में व्यस्त है और हमारे रक्षामंत्री, जार्ज फर्नांडिस योगोस्लाविया पर हो रहे नैटो-अमरीकी हमलों पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन कर रहे हैं.....कोई भी पार्टी, नेता या राजनेता देश की उत्तरी सीमा पर चल रहे इस विस्फोटक युद्ध पर न तो चिंता व्यक्त कर रहा है, न कोई बयान दे रहा है, जबकि उत्तरी सीमान्त पर कारगिल-द्रास के इलाके में पाकिस्तानी तोपें पिछले पखवाड़े से अपने बारूदी बयान लगातार दर्ज कर रही हैं।...."[22]

इस प्रकार कमलेश्वर के उपन्यासों में राजनीति में व्याप्त विसंगतियों का बिलकुल यथार्थ चित्रण हुआ है। यह चित्रण वर्तमान राजनीति से सीधा सम्बन्ध रखता है। इस चित्रण के माध्यम से कमलेश्वर ने पाठक को जगाने का कार्य किया है। साथ ही राजनेताओं के दोहरे चरित्र को नंगा करके, उन्हें फटकार भी लगाई है और इस चित्रण से पाठक व समाज जागृत हुआ है। साथ ही वह सोचने को भी मजबूर हो उठा है, जोकि कमलेश्वर के उपन्यासों की सार्थकता को सिद्ध करता है।

सन्दर्भ-

1. डॉ. सत्यजीत चिखलीकर, कमलेश्वर के उपन्यास, पृ. 230
2. कमलेश्वर : एक सड़क सत्तावन गलियाँ, पृ. 33
3. कमलेश्वर : लौटे हुए मुसाफिर, समग्र उपन्यास, पृ. 104
4. वही, पृ. 115
5. कमलेश्वर के उपन्यास, पृ. 265
6. कमलेश्वर, काली आँधी, पृ. 21
7. वही, पृ. 10
8. कमलेश्वर, रेगिस्तान, समग्र उपन्यास, पृ. 705
9. कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, पृ. 46-47
10. वही, पृ. 45
11. कमलेश्वर, एक और चन्द्रकान्ता, भाग-एक, पृ. 53
12. कमलेश्वर के उपन्यास, पृ. 233
13. एक सड़क सत्तावन गलियाँ, समग्र उपन्यास, पृ. 53
14. एक सड़क सत्तावन गलियाँ, समग्र उपन्यास, पृ. 27
15. लौटे हुए मुसाफिर, समग्र उपन्यास, पृ. 104
16. वही, पृ. 142
17. कमलेश्वर के उपन्यास, पृ. 255
18. काली आँधी, समग्र उपन्यास, पृष्ठ 576
19. वही, पृ. 378
20. काली आँधी, पृ. 10
21. कमलेश्वर : रेगिस्तान, समग्र उपन्यास, पृ. 705
22. कितने पाकिस्तान, पृ. 14

असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय चन्द्रबदनी, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

पृ. 136 का शेष भाग...

शासन सम्मान के रूप में दिये गए। लेखक के रूप में नरेशजी 'दूसरा सप्तक' के बाद ही प्रसिद्ध हुए।

नरेश मेहता सन् 1969 से लेकर सन् 1985 तक इलाहाबाद में रहकर साहित्य सर्जन करते रहे। सन् 1975 से सन् 1992 तक प्रेमचंद सृजनपीठ उज्जैन में निदेशक के मानद पद पर कार्यरत रहे। इसी दरमियान नरेशजी ने इंदौर से निकलने वाले दैनिक। इसी दरमियान नरेशजी ने इंदौर प्रधान संपादक पद को स्वीकारा। सन् 1998 में गिने-चुने साहित्यकार को दिए जाने वाला पुरस्कार उनके समग्र साहित्य पर दिया गया फिर क्या था उनका अन्तर्राष्ट्रीय साहित्यिक व्यक्तित्व की उभर कर आया जब उनके साहित्य का विदेशी भाषाओं में अनुवाद होने लगा।

सहायक ग्रंथ-

1. नरेश मेहता के काव्यों का सामाजिक चिंतन, डॉ. टी. शुभानंद
2. नरेश मेहता के मिथकीय खण्डकाव्य, डॉ. वर्षा शाह

Pv. 35, D.n. 18, Babuiwagar, 1st, mainstreet, Gomathipiram, Tirvrivadaram 602024